Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume - 5 | Issue - 2 | Nov - 2015

संत कबीर: मनुष्यधर्म के प्रवर्तक

डॉ.सौदागर म. साळुंखे
हिंदी .पीएच.डी. मा.ह.महाडीक कला एवं वाणिज्य
महा.मोडनिंब. ता. माढा, जिल्हा. सोलापूर.

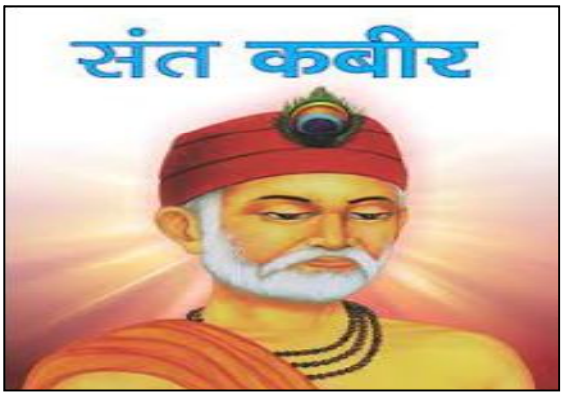

सारांश

संत कबीर दास को उत्तरी भारत में भक्ति और सूफी आंदोलन का सबसे प्रभावशाली और सबसे उल्लेखनीय कवि माना जाता है। वह पहले भारतीय संत हैं जिन्होंने एक सार्वभौमिक मार्ग देकर हिंदू धर्म और इस्लाम का समन्वय किया है जिसका पालन हिंदू और मुसलमान दोनों कर सकते हैं। उन्होंने हमेशा मोक्ष के साधन के रूप में कर्मकांड और तपस्वी विधियों का विरोध किया। उन्होंने खुले तौर पर सभी संप्रदायों की आलोचना की और मानव अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर अपने सीधे आगे के दृष्टिकोण के साथ भारतीय दर्शन को एक नई दिशा दी। गौरतलब है कि कबीर किसी धर्म के खिलाफ नहीं बल्कि धर्म के नाम पर लोगों द्वारा किए जा रहे पाखंड के खिलाफ प्रचार कर रहे थे। यही कारण है कि कबीर को पूरी दुनिया में बहुत सम्मान दिया जाता है। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने बचपन में ही अपने गुरु रामानंद से अपना सारा आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया था। एक दिन, वह गुरु रामानंद के प्रसिद्ध शिष्य बन गए। कबीर दास का घर छात्रों और विद्वानों के रहने और उनके महान कार्यों के अध्ययन के लिए रखा गया है।

कबीर दास के जन्म माता-पिता का कोई सुराग नहीं है क्योंकि उनकी स्थापना नीरू और नीमा (उनके कार्यवाहक माता-पिता) द्वारा वाराणसी के एक छोटे से शहर लहरतारा में की गई थी। उनके माता-पिता बेहद गरीब और अशिक्षित थे लेकिन उन्होंने दिल से छोटे बच्चे को गोद लिया और उसे अपने व्यवसाय के बारे में प्रशिक्षित किया। उन्होंने एक साधारण गृहस्थ और एक फकीर का संतुलित जीवन जिया।

मुलशब्द : कबीर ज्ञानामृत : कबीरायन , कहै कबीर दीवाना , कहत कबीर

प्रस्तावना

एक कहानी अक्सर कबीर के प्रारंभिक जीवन के बारे में बताई जाती है, और आमतौर पर उनके अपने शब्दों पर आधारित होती है, जो उनकी धार्मिक प्रवृत्ति पर कुछ प्रकाश डालती है। कहानी एक धार्मिक फकीर के जीवन में कबीर की दीक्षा से संबंधित है। अपनी मुस्लिम पृष्ठभूमि के बावजूद, कबीर को हिंदू रहस्यवादी रामानंद का शिष्य बनने की उम्मीद थी। यह महसूस करते हुए कि उसकी संभावना कम थी, वह गंगा नदी की ओर जाने वाली कुछ सीढ़ियों पर छिप गया, जिन कदमों का उपयोग रामानंद आमतौर पर सुबह नदी

में स्नान करने के लिए करते समय करते थे। हिंदू तपस्वी ने गलती से कबीर पर कदम रखा, और पुकारा "राम! राम!" - मोटे तौर पर, "मेरे भगवान! मेरे भगवान!" कबीर ने दावा किया कि रामानंद द्वारा बोले गए इस मंत्र ने उन्हें हिंदू रहस्यवादी के शिष्यत्व में आरंभ किया। रामानंद के हिंदू सेवक और साथ ही स्थानीय मुस्लिम पर्यवेक्षक नाराज थे, लेकिन कबीर ने रामानंद के साथ शिष्यता का दावा करना जारी रखा और महान संत उनकी दृढ़ता से प्रभावित हुए। कबीर की अपनी कविताओं में रामानंद को उनके गुरु के रूप में वर्णित किया गया है, और दो मनीषियों की प्रत्यक्ष, भक्ति भाषा के कई सामान्य पहलू हैं। माना जाता है कि एक समय में रामानंद की मृत्यु पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुई थी, लेकिन अब यह माना जाता है कि उनका जन्म 1400 के आसपास हुआ था और उनकी मृत्यु 1470 के आसपास हुई थी। यदि कबीर वास्तव में एक युवा धार्मिक साधक थे, जब वे रामानंद से मिले थे, तो उनकी तिथि 1440 संभावित रूप से उनकी जन्मतिथि के करीब आता है। भारतीय संस्कृति और साहित्य में सबसे महान नामों में से एक कबीर दास द्वारा छोड़े गए जन्म, जन्म स्थान, जीवन, मृत्यु और कार्यों के बारे में विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। वह कवि, गायक और संत धर्म के संस्थापक थे, और 'कबीर' शब्द 'एक महान व्यक्ति' को दर्शाता है। यह धर्म इस्लाम और हिंदू धर्म के सिद्धांतों का एक संयोजन था, जिसे उन्होंने इस्लाम-हिंदू मित्रता और सभी पुरुषों के भाईचारे के लिए उपयोग करने का प्रयास किया; और अंधविश्वासों और अनुचित प्रथाओं का विरोध करने के लिए भी। कबीर काशी में रहते थे, (बनारस) भारत में हिंदू तीर्थयात्रा का सबसे प्रसिद्ध केंद्र। 14वीं शताब्दी में और उनके कार्यों ने हिंदी साहित्य में भक्ति आंदोलन के रूप में जाना जाता है।

कबीर की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं थी। मैंने स्याही या कागज को छुआ नहीं है, न ही मैंने कलम पकड़ी है, वह अपने दोहे में कहता है। वह एक बुनकर था, और वह अपने कुछ कार्यों में खुद को ऐसा कहता है। उसने अपने माता-पिता को खो दिया - कुछ लोग कहते हैं कि उसकी माँ एक ब्राह्मण विधवा थी - जीवन में ही। किंवदंतियाँ हैं कि उनका पालन-पोषण गैर-हिंदुओं द्वारा किया गया था। वह अपनी कविताओं में दावा करता है कि वह न तो हिंदू है और न ही मुसलमान। रूढ़िवादी अंधविश्वासों और मूर्खतापूर्ण रीति-रिवाजों की उनकी स्पष्ट आलोचना ने उनके लिए बड़ी संख्या में शत्रुओं को अर्जित किया। कबीर का पहला संदर्भ भक्तमाला (१५०० ई.) में उपलब्ध है, जिसमें उनके प्रारंभिक जीवन के बारे में कुछ मूल्यवान जानकारी उपलब्ध है। सिख धर्म के पवित्र ग्रंथ ग्रैंडा साहिब में भी कबीर का उल्लेख है और उनकी कुछ कविताएं हैं।

कबीर दास शिक्षण

ऐसा माना जाता है कि उन्होंने संत कबीर के गुरु रामानंद से आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की थी। शुरू में रामानंद कबीर दास को अपना शिष्य मानने के लिए राजी नहीं हुए। एक बार की बात है, संत कबीर दास एक तालाब की सीढ़ियों पर लेटे हुए थे और राम-राम मंत्र का जाप कर रहे थे, रामानंद सुबह स्नान करने जा रहे थे और कबीर उनके पैरों के नीचे आ गए। रामानन्द को उस गतिविधि के लिए दोषी महसूस हुआ और कबीर दास जी ने उन्हें अपने छात्र के रूप में स्वीकार करने का आग्रह किया। ऐसा माना जाता है कि कबीर का परिवार आज भी वाराणसी के कबीर चौरा में रहता है।

कबीर मठ

कबीर मठ कबीर चौरा, वाराणसी और लहरतारा, वाराणसी में पीछे के मार्ग में स्थित है

जहाँ संत कबीर के दोहे गाने में व्यस्त हैं। यह लोगों को जीवन की वास्तविक शिक्षा देने का स्थान है। नीरू टीला उनके माता-पिता नीरू और नीमा का घर था। अब यह कबीर के काम का अध्ययन करने वाले छात्रों और विद्वानों के लिए आवास बन गया है।

दर्शन

संत कबीर उस समय के मौजूदा धार्मिक मूड जैसे हिंदू धर्म, तंत्रवाद के साथ-साथ व्यक्तिगत भक्ति, इस्लाम के मूर्तिहीन भगवान के साथ मिश्रित थे। कबीर दास पहले भारतीय संत हैं जिन्होंने हिंदू और इस्लाम दोनों को एक सार्वभौमिक मार्ग देकर हिंदू और इस्लाम का समन्वय किया है, जिसका पालन हिंदू और मुस्लिम दोनों कर सकते हैं। उनके अनुसार, प्रत्येक जीवन का दो आध्यात्मिक सिद्धांतों (जीवात्मा और परमात्मा) के साथ संबंध है। मोक्ष के बारे में उनका विचार था कि यह इन दो दिव्य सिद्धांतों को एकजुट करने की प्रक्रिया है। उनकी महान कृति बीजक में कविताओं का एक विशाल संग्रह है जो कबीर के आध्यात्मिकता के सामान्य दृष्टिकोण को दर्शाता है। कबीर की हिंदी एक बोली थी, उनके दर्शन की तरह सरल। उन्होंने बस भगवान में एकता का पालन किया। उन्होंने हमेशा हिंदू धर्म में मूर्ति पूजा को खारिज किया है और भक्ति और सूफी विचारों में स्पष्ट विश्वास दिखाया है।

उनकी कविता

उन्होंने एक वास्तविक गुरु की प्रशंसा के अनुरूप कविताओं की रचना एक संक्षिप्त और सरल शैली में की थी। अनपढ़ होने के बावजूद उन्होंने अवधी, ब्रज और भोजपुरी जैसी कुछ अन्य भाषाओं को मिलाकर हिंदी में अपनी कविताएँ लिखी थीं। हालाँकि कई लोगों ने उनका अपमान किया लेकिन उन्होंने कभी दूसरों पर ध्यान नहीं दिया।

विरासत

संत कबीर को श्रेय दी गई सभी कविताएँ और गीत कई भाषाओं में मौजूद हैं। कबीर और उनके अनुयायियों का नाम उनकी काव्य प्रतिक्रिया जैसे कि बनियों और कथनों के अनुसार रखा गया है। कविताओं को दोहे, श्लोक और सखी कहा जाता है। सखी का अर्थ है याद किया जाना और उच्चतम सत्य को याद दिलाना। इन कथनों को याद करना, प्रदर्शन करना और उन पर विचार करना कबीर और उनके सभी अनुयायियों के लिए आध्यात्मिक जागृति का मार्ग है।

कबीर दास का जीवन इतिहास

सिद्धपीठ कबीरचौरा मठ मुलगाड़ी और उनकी परंपरा:कबीरचौरा मठ मुलगड़ी संत-शिरोमणि कबीर दास का घर, ऐतिहासिक कार्य स्थल और ध्यान स्थान है। वह अपने प्रकार के एकमात्र संत थे, जिन्हें "सब संतान सरताज" के नाम से जाना जाता था। ऐसा माना जाता है कि कबीरचौरा मठ मुलगाड़ी के बिना मानवता का इतिहास बेकार है जैसे संत कबीर के बिना सभी संत बेकार हैं। कबीरचौरा मठ मुलगड़ी की अपनी समृद्ध परंपराएं और प्रभावी इतिहास है। यह कबीर का घर होने के साथ-साथ सभी संतों के लिए साहसी विद्यापीठ भी है। मध्यकाल भारत के भारतीय संतों ने अपनी आध्यात्मिक शिक्षा इसी स्थान से प्राप्त की। मानव परंपरा के इतिहास में यह साबित हो चुका है कि गहन ध्यान के लिए हिमालय जाना जरूरी नहीं है, बल्कि समाज में रहकर किया जा सकता है। कबीर दास स्वयं इसके आदर्श संकेत थे। वह भक्ति का वास्तविक संकेत है, सामान्य मानव जीवन के साथ रहकर। उन्होंने पत्थर की पूजा करने के बजाय लोगों को मुक्त भक्ति का रास्ता दिखाया।

कबीर मठ में कबीर के साथ-साथ उनकी परंपरा के अन्य संतों की उपयोग की गई चीजें

अभी भी सुरक्षित और सुरक्षित रखी गई हैं। कबीर मठ में बुनाई की मशीन, खडौं, रुद्राक्ष की माला (उनके गुरु स्वामी रामानंद से प्राप्त), जंग रहित त्रिशूल और कबीर द्वारा उपयोग की जाने वाली अन्य सभी चीजें उपलब्ध हैं।

ऐतिहासिक कुआं:

कबीर मठ में यहां एक ऐतिहासिक कुआं है, जिसका पानी उनकी साधना के अमृत रस में मिला हुआ माना जाता है। इसका अनुमान सबसे पहले दक्षिण भारत के महान पंडित सर्वानंद ने लगाया था। वह यहाँ कबीर से वाद-विवाद करने आया और उसे प्यास लगी। उसने पानी पिया और कमली से कबीर का पता पूछा। कमली ने उसे पता बताया लेकिन कबीर दास के दोहे के रूप में।

कबीर का घर सिखर पर, जहान सीधी गल।
पाव न टिकाई पिपिल का, पंडित लड़े बाल।

वह बहस करने के लिए कबीर के पास गया लेकिन कबीर कभी इसके लिए तैयार नहीं हुआ और अपनी हार को लिखित रूप में स्वीकार कर सर्वानंद को दे दिया। सर्वानंद अपने घर लौट आए और हार का वह कागज अपनी मां को दिखाया और अचानक उन्होंने देखा कि बयान बिल्कुल विपरीत हो गया है। वह उस सत्य से बहुत प्रभावित हुए और पुन काशी में कबीर मठ लौट आए और कबीर दास के शिष्य बन गए। वे इतने महान स्तर से प्रभावित थे कि उन्होंने जीवन भर कभी किसी पुस्तक को नहीं छुआ। बाद में सर्वानंद आचार्य सुर्तिगोपाल साहब के नाम से प्रसिद्ध हुए। कबीर के बाद वे कबीर मठ के मुखिया बने।

पहुँचने के लिए कैसे करें

सिद्धपीठ कबीरचौरा मठ मुलगड़ी भारत के प्रसिद्ध सांस्कृतिक शहर वाराणसी में स्थित है। एयरलाइन, रेलवे लाइन या सड़क मार्ग से यहां पहुंचा जा सकता है। यह वाराणसी हवाई अड्डे से लगभग 18 किमी और वाराणसी जंक्शन रेलवे स्टेशन से लगभग 3 किमी दूर स्थित है।

यहां क्षमा मांगने आए थे काशी नरेश:

एक बार की बात है काशी नरेश, राजा वीरदेव सिंह जू देव अपनी पत्नी के साथ कबीर मठ में अपना राज्य छोड़कर क्षमा पाने के लिए आए थे। इतिहास है: एक बार, काशी राजा ने कबीर दास के बारे में बहुत कुछ सुनकर सभी संतों को अपने राज्य में बुलाया। कबीर दास अपने छोटे से पानी के घड़े को लेकर अकेले पहुँचे। उसने छोटे घड़े से सारा पानी अपने पैरों पर डाल दिया, थोड़ा सा पानी बहुत दूर तक जमीन पर बहने लगा और पूरा राज्य पानी से भर गया, तो कबीर से उसके बारे में पूछा गया। उन्होंने कहा कि जगन्नाथपुई में एक भक्त पांडा अपनी झोपड़ी में खाना बना रहा था, जिसमें आग लग गई। मैंने जो पानी डाला, वह झोंपड़ी को जलने से बचाने के लिए था। आग गंभीर थी इसलिए छोटी बोतल से अधिक पानी लाना बहुत जरूरी था। लेकिन राजा और उनके अनुयायियों ने उस कथन को कभी स्वीकार नहीं किया और वे एक वास्तविक गवाह चाहते थे। उन्हें लगा कि उड़ीसा शहर में आग लग गई है और कबीर यहां काशी में पानी डाल रहे हैं। राजा ने अपने एक अनुयायी को जांच के लिए भेजा। अनुयायी ने लौटकर बताया कि कबीर का सब कथन सत्य था। राजा को बहुत अफ़सोस हुआ और उसने और उसकी पत्नी ने क्षमा पाने के लिए कबीर मठ जाने का फैसला किया। क्षमा न मिलने पर उन्होंने आत्महत्या करने का फैसला किया। उन्हें क्षमा मिल गई और उसी दिन से राजा भी कबीरचौरा मठ के एक दयनीय सदस्य बन गए।

समाधि मंदिर:

समाधि मंदिर का निर्माण उसी स्थान पर किया गया है जहाँ कबीर अपनी साधना करने के

आदी थे। साधना से समाधि तक की यात्रा तब मानी जाती है जब कोई संत इस स्थान पर जाता है। आज भी, यह वह स्थान है जहाँ संतों को बहुत अधिक अदृश्य सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव होता है। यह जगह शांति और ऊर्जा के लिए दुनिया भर में मशहूर है। ऐसा माना जाता है कि, उनकी मृत्यु के बाद, लोग उनके शरीर को अंतिम संस्कार के लिए लेने को लेकर झगड़ रहे थे। लेकिन, जब उनके समाधि कक्ष का दरवाजा खोला गया, तो केवल दो फूल थे, जो उनके हिंदू मुस्लिम शिष्यों के बीच अंतिम संस्कार के लिए वितरित किए गए थे। समाधि मंदिर का निर्माण मिर्जापुर की मजबूत ईंटों से किया गया है।

कबीर चबूतरा में बीजक मंदिर:

यह स्थान कबीर दास का कार्यस्थल होने के साथ-साथ साधनास्थल भी था। यहीं पर उन्होंने अपने शिष्यों को भक्ति, ज्ञान, कर्म और मानवता का ज्ञान दिया था। इस जगह का नाम कबीर चबूतरा रखा गया। बीजक कबीर दास की महान कृति थी, इसलिए कबीर चबूतरा का नाम बीजक मंदिर पड़ा।

कबीर तेरी झोपड़ी, गलकटो के पास।
जो करेगा सो भरेगा, तुम क्यों गर्म उड़द।

कबीर दास का देश के लिए योगदान

मध्यकालीन भारत के एक भक्ति और सूफी आंदोलन संत, संत कबीर दास, उत्तर भारत में अपने भक्ति आंदोलन के लिए बड़े पैमाने पर हैं। उनका जीवन चक्र काशी (बनारस या वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है) के क्षेत्र में केंद्रित है। वह जुलाहा के बुनाई व्यवसाय और कलाकारों से संबंधित था। भारत में भक्ति आंदोलन के प्रति उनके अपार योगदान को फरीद, रविदास और नामदेव के साथ अग्रणी माना जाता है। वह संयुक्त रहस्यमय प्रकृति (नाथ परंपरा, सूफीवाद, भक्ति) के संत थे, जिसने उन्हें अपने स्वयं के एक विशिष्ट धर्म का बना दिया। उन्होंने कहा कि दुख का मार्ग ही सच्चा प्रेम और जीवन है।पंद्रहवीं शताब्दी में, वाराणसी के लोग ब्राह्मण रूढ़िवादिता के साथ-साथ शिक्षा केंद्रों से बहुत प्रभावित थे। कबीर दास ने अपनी विचारधारा का प्रचार करने के लिए कड़ी मेहनत की, क्योंकि वह निचली जाति, जुलाहा से थे, और लोगों को यह एहसास कराया कि हम सभी इंसान हैं। उन्होंने कभी भी लोगों के बीच अंतर महसूस नहीं किया, चाहे वे वेश्या हों, नीची जाति के हों या उच्च जाति के हों। उन्होंने अपने अनुयायियों को इकट्ठा करके सभी को उपदेश दिया। उनके उपदेश कार्यों के लिए ब्राह्मणों द्वारा उनका उपहास किया गया था, लेकिन उन्होंने कभी भी उनकी आलोचना नहीं की और इसलिए उन्हें आम लोगों द्वारा बहुत पसंद किया गया। उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से आम लोगों के मन को वास्तविक सत्य की ओर सुधारना शुरू किया।

उन्होंने हमेशा मोक्ष के साधन के रूप में कर्मकांड और तपस्वी विधियों का विरोध किया। उन्होंने कहा कि अच्छाई के माणिक का मूल्य माणिक की खानों से अधिक होता है। उनके अनुसार, अच्छाई के साथ एक के दिल में पूरी दुनिया की सारी समृद्धि शामिल है। दयावान व्यक्ति में शक्ति होती है, क्षमा का वास्तविक अस्तित्व होता है, और धार्मिक व्यक्ति आसानी से कभी न खत्म होने वाले जीवन को प्राप्त कर सकता है। उसने कहा कि ईश्वर तुम्हारे हृदय में है और सदा तुम्हारे साथ है, इसलिए उसकी आन्तरिक आराधना करो। उन्होंने अपने एक उदाहरण से आम लोगों का दिमाग खोल दिया था कि, अगर यात्री चलने में सक्षम नहीं है; यात्री के लिए सड़क क्या कर सकती है।

उन्होंने लोगों की गहरी आंखें खोलीं और उन्हें मानवता, नैतिकता और आध्यात्मिकता को कम करना सिखाया। वे अहिंसा के अनुयायी और प्रवर्तक थे। उन्होंने अपने क्रांतिकारी उपदेश के

माध्यम से लोगों के दिमाग को अपने दौर से हटा दिया था। उनके जन्म और परिवार के बारे में कोई वास्तविक प्रमाण और सुराग नहीं है, कुछ लोग कहते हैं कि वह एक मुस्लिम परिवार से थे; कुछ लोग कहते हैं कि वह एक उच्च श्रेणी के ब्राह्मण परिवार से थे। उनकी मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार प्रणाली को लेकर मुस्लिम और हिंदू से जुड़े लोगों में कुछ असहमति थी। उनका जीवन इतिहास पौराणिक है और आज भी मनुष्य को वास्तविक मानवता सिखाता है।

कबीर दास का धर्म

कबीर दास के अनुसार, वास्तविक धर्म जीवन जीने का एक तरीका है जिसे लोग जीते हैं न कि लोगों द्वारा बनाए गए। उनके अनुसार कर्म ही पूजा है और जिम्मेदारी धर्म के समान है। उन्होंने कहा कि अपना जीवन जियो, अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करो और अपने जीवन को शाश्वत बनाने के लिए कड़ी मेहनत करो। सन्यास लेने जैसी जीवन की जिम्मेदारियों से कभी न भागें। उन्होंने पारिवारिक जीवन की सराहना की और उसे महत्व दिया जो जीवन का वास्तविक अर्थ है। वेदों में यह भी उल्लेख है कि घर और जिम्मेदारियों को छोड़कर जीवन जीना वास्तविक धर्म नहीं है। गृहस्थ के रूप में रहना भी एक महान और वास्तविक संन्यास है। जैसे निर्गुण साधु जो पारिवारिक जीवन जीते हैं, वे अपनी दैनिक दिनचर्या की रोटी के लिए कड़ी मेहनत करते हैं और साथ ही भगवान के नाम का जाप करते हैं। उन्होंने लोगों को एक प्रामाणिक तथ्य दिया है कि मनुष्य का धर्म क्या होना चाहिए। उनके इस तरह के उपदेशों ने आम लोगों को जीवन के रहस्य को बहुत आसानी से समझने में मदद की है।

कबीर दास: एक हिंदू या एक मुसलमान

ऐसा माना जाता है कि कबीर दास की मृत्यु के बाद, हिंदुओं और मुसलमानों ने कबीर दास का शव प्राप्त करने का दावा किया था। वे दोनों कबीर दास के शव का अंतिम संस्कार अपने-अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं के अनुसार करना चाहते थे। हिंदुओं ने कहा कि वे शरीर को जलाना चाहते हैं क्योंकि वह एक हिंदू था और मुसलमानों ने कहा कि वे उसे मुस्लिम संस्कार के तहत दफनाना चाहते हैं क्योंकि वह एक मुसलमान था। लेकिन, जब उन्होंने शव से चादर हटाई तो उन्हें उसके स्थान पर केवल कुछ फूल मिले। उन्होंने एक-दूसरे के बीच फूल बांटे और अपनी-अपनी परंपराओं और रीति-रिवाजों के अनुसार अंतिम संस्कार किया। यह भी माना जाता है कि जब वे युद्ध कर रहे थे तो कबीर दास की आत्मा उनके पास आई और उन्होंने कहा कि, "मैं न तो हिंदू था और न ही मुसलमान। मैं दोनों था, मैं कुछ भी नहीं था, मैं ही सब कुछ था, मैं दोनों में ईश्वर को पहचानता हूं। न कोई हिंदू है और न कोई मुसलमान। जो मोह से मुक्त है उसके लिए हिन्दू और मुसलमान एक ही हैं। कफन हटाओ और चमत्कार देखो!" कबीर दास का मंदिर काशी में कबीर चौरा पर बना है जो अब पूरे भारत के साथ-साथ भारत के बाहर लोगों के लिए महान तीर्थ स्थान बन गया है। और उसकी एक मस्जिद मुसलमानों द्वारा कब्र के ऊपर बनवाई गई जो मुसलमानों के लिए तीर्थ बन गई है।

कबीर दास के भगवान

उनके गुरु रामानंद ने उन्हें गुरु-मंत्र के रूप में भगवान राम का नाम दिया था जिसकी व्याख्या उन्होंने अपने तरीके से की थी। वे निर्गुण भक्ति के प्रति समर्पित थे न कि अपने गुरु की तरह सगुण भक्ति के प्रति। उनके राम एक पूर्ण शुद्ध सच्चिदानंद थे, न कि दशरथ के पुत्र या . के राजा अयोध्या के रूप में उन्होंने कहा "दशरथ के घर न जन्मे, ये चल माया कीन्हा।" "वह इस्लामी

परंपरा पर बुद्धों और सिद्धों से बहुत प्रभावित थे। उनके अनुसार, "निर्गुण नाम जपहु रे भैया, अविगति की गति लखी न जय।" उन्होंने कभी भी अल्लाह और राम में अंतर नहीं किया, उन्होंने हमेशा लोगों को उपदेश दिया कि ये केवल एक भगवान के अलग-अलग नाम हैं। उन्होंने कहा कि बिना किसी उच्च या निम्न वर्ग या जाति के लोगों में प्रेम और भाईचारे का धर्म होना चाहिए। उस ईश्वर के प्रति समर्पण और समर्पण करो जिसका कोई धर्म या जाति नहीं है। वह हमेशा जीवन के कर्म में विश्वास करते थे।

कबीर दास की मृत्यु

15वीं शताब्दी के सूफी कवि कबीर दास के अनुसार, ऐसी मान्यता है कि उन्होंने अपनी मृत्यु का स्थान मगहर चुना था, जो लखनऊ से लगभग 240 किमी दूर स्थित है। उन्होंने लोगों के दिमाग से परियों की कहानी (मिथक) को दूर करने के लिए इस जगह को मरने के लिए चुना है। उन दिनों यह माना जाता था कि जो व्यक्ति मगहर क्षेत्र में अपनी अंतिम सांस लेता है और मर जाता है, उसे स्वर्ग में जगह नहीं मिलेगी और साथ ही अगले जन्म में गधे का जन्म भी नहीं होगा। लोगों के मिथकों और अंधविश्वासों को तोड़ने के कारण कबीर दास की मृत्यु काशी के बजाय मगहर में हुई। विक्रम संवत 1575 में हिंदू कैलेंडर के अनुसार, उन्होंने माघ शुक्ल एकादशी पर वर्ष 1518 में जनवरी के महीने में मगहर में दुनिया को छोड़ दिया। यह भी माना जाता है कि जो काशी में मर जाता है, वह सीधे स्वर्ग जाता है इसलिए हिंदू लोग अपने अंतिम समय में काशी जाते हैं और मोक्ष प्राप्त करने के लिए मृत्यु की प्रतीक्षा करते हैं। मिथक को ध्वस्त करने के लिए कबीर दास की मृत्यु काशी से हुई थी। इससे जुड़ी एक प्रसिद्ध कहावत है "जो कबीरा काशी मुए तो रमे कौन निहोरा" यानी काशी में मरने से ही स्वर्ग जाने का आसान रास्ता है तो भगवान की पूजा करने की क्या जरूरत है। कबीर दास की शिक्षाएँ सार्वभौमिक और सभी के लिए समान हैं क्योंकि वह कभी भी मुसलमानों, सिखों, हिंदुओं और विभिन्न धर्मों के अन्य लोगों के बीच अंतर नहीं करते हैं। मगहर में कबीर दास की मजार और समाधि है। उनकी मृत्यु के बाद उनके हिंदू और मुस्लिम धर्म के अनुयायी उनके शरीर के अंतिम संस्कार के लिए लड़ते हैं। लेकिन जब वे शव से चादर निकालते हैं तो उन्हें केवल कुछ फूल मिलते हैं जिन्हें उन्होंने अपने रीति-रिवाजों और परंपराओं के अनुसार अंतिम संस्कार पूरा किया।

समाधि से कुछ मीटर की दूरी पर एक गुफा है जो मृत्यु से पहले उनके ध्यान स्थान को इंगित करती है। कबीर शोध संस्थान नाम का एक ट्रस्ट चल रहा है जो कबीर दास के कार्यों पर शोध को बढ़ावा देने के लिए एक शोध फाउंडेशन के रूप में काम करता है। यहां शैक्षणिक संस्थान भी चल रहे हैं जिनमें कबीर दास की शिक्षाएं शामिल हैं।

कबीर दास: एक रहस्यवादी कवि

एक महान रहस्यवादी कवि, कबीर दास, भारत के प्रमुख आध्यात्मिक कवियों में से एक हैं जिन्होंने लोगों के जीवन को बढ़ावा देने के लिए अपने दार्शनिक विचार दिए हैं। ईश्वर में एकता के उनके दर्शन और वास्तविक धर्म के रूप में कर्म ने लोगों के मन को अच्छाई की ओर बदल दिया है। ईश्वर के प्रति उनका प्रेम और भक्ति हिंदू भक्ति और मुस्लिम सूफी दोनों की अवधारणा को पूरा करती है।ऐसा माना जाता है कि वह हिंदू ब्राह्मण परिवार से थे, लेकिन मुस्लिम बुनकरों द्वारा बिना बच्चे, नीरू और निम्मा के समर्थक थे। वह उनके द्वारा लहरतारा (काशी में) के एक विशाल कमल के पत्ते पर स्थित तालाब में स्थापित किया गया था। उस समय रूढ़िवादी हिंदू और मुस्लिम लोगों के बीच बहुत असहमति थी जो कबीर दास का मुख्य फोकस अपने दोहे या दोहों द्वारा उस मुद्दे को हल करना था। व्यावसायिक रूप से उन्होंने

कभी कक्षाओं में भाग नहीं लिया लेकिन वे बहुत ही ज्ञानी और रहस्यवादी व्यक्ति थे। उन्होंने अपने दोहे और दोहे औपचारिक भाषा में लिखे जो उस समय बहुत बोली जाती थी जिसमें ब्रज, अवधी और भोजपुरी भी शामिल हैं। उन्होंने सामाजिक बाधाओं के आधार पर बहुत सारे दोहे, दोहे और कहानियों की किताबें लिखीं।

कबीर दासी की कृतियाँ

कबीर दास द्वारा लिखित पुस्तकें आम तौर पर दोहा और गीतों का संग्रह हैं। कुल कार्य बहत्तर हैं जिनमें कुछ महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध कार्य शामिल हैं जिनमें रेख़्ता, कबीर बीजक, सुखनिधान, मंगल, वसंत, सबदास, सखियाँ और पवित्र आगम शामिल हैं। कबीर दास की लेखन शैली और भाषा बहुत ही सरल और सुंदर है। उन्होंने अपने दोहे बहुत साहस और स्वाभाविक रूप से लिखे थे जो अर्थ और महत्व से भरे हुए हैं। उन्होंने दिल की गहराइयों से लिखा है। उन्होंने अपने सरल दोहे और दोहे में पूरी दुनिया के भावों को संकुचित कर दिया है। उनकी बातें तुलना और प्रेरणा से परे हैं।सभी संगठित धर्मों को खारिज कर दिया भारत और पश्चिम दोनों में कबीर के जीवन के वृत्तांत, उनके जन्म के संबंध में परस्पर विरोधी जानकारी प्रदान करते हैं। कबीर के भारतीय प्रशंसक उनके उल्लेखनीय कारनामों के बीच लंबे जीवन को सूचीबद्ध करते हैं। कुछ लोगों ने दावा किया है कि वह ३०० साल तक जीवित रहे, और १२० साल की उम्र अभी भी आमतौर पर दी जाती है, १३९८ के जन्म वर्ष और १५१८ के मृत्यु वर्ष के साथ। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन बनारस शहर में बिताया, और जिस पुस्तक ने कबीर को पश्चिम से परिचित कराया, उसमें उनका जन्म 1440 में हुआ था, जिसमें उनकी मृत्यु के लिए दी गई सामान्य तिथि 1518 थी। उत्तर भारत के कई अन्य शहरों को उनके जन्म स्थान के रूप में प्रस्तावित किया गया है, मगहर का नाम शायद किसी भी अन्य की तुलना में अधिक बार रखा गया है। यह कुछ हद तक स्पष्ट है कि कबीर का जन्म इस्लामिक आस्था में हुआ था, कबीर या अल-कबीर, जिसका अर्थ है महान, इस्लामी दुनिया में एक सामान्य नाम है और कुरान में दिए गए भगवान के 99 नामों में से एक है। ऐसा प्रतीत होता है कि संगठित धर्म को उसके सभी रूपों में अस्वीकार करने के बावजूद, हिंदुओं और मुसलमानों दोनों ने कबीर को अपने में से एक होने का दावा करने की कोशिश की है। एक आम किंवदंती यह मानती है कि कबीर एक ब्राह्मण की विधवा की संतान थे, जो हिंदू भारत की पुरोहित जाति का सदस्य था, और उसे एक मुस्लिम बुनकर के परिवार को पालने के लिए दिया गया था। स्रोत और किंवदंतियाँ इस बात से सहमत हैं कि कबीर बुनकर के व्यापार का अभ्यास करता था, और इसे उनकी जीवनी में कुछ ठोस तथ्यों में से एक माना जा सकता है।

कबीर की कविताएँ, हालांकि सरल शब्दों में, शक्तिशाली विचार से गर्भवती थीं, और प्रभाव अनूठा था। वे चतुर्भुज भगवान की पूजा करते हैं लेकिन मैं कई भुजाओं वाले भगवान की पूजा करता हूं - उन्होंने अपनी एक कविता में कहा। एक अन्य कविता में उन्होंने पूछा - तुर्कों की मस्जिदें हैं और हिंदुओं के मंदिर हैं, लेकिन जहां मस्जिद और मंदिर नहीं हैं, वहां सत्ता का मालिक कौन है? एक और कविता मासूमियत से घोषणा करती है - गंगा में डुबकी लगाने से सांसारिक जीवन से मुक्ति मिलती है, तो नीच मेंढक को दिन में कई बार यह मुक्ति मिलनी चाहिए थी! कबीर के भगवान न मूर्ति में थे, न मन्दिरों में, न मस्जिदों में; लेकिन यह परम ज्ञान है। इसका कोई आकार नहीं है, और कोई चेहरा नहीं है, यहां तक कि प्रतीकात्मक रूप भी नहीं है; लेकिन यह एक फूल की सुगंध की तरह है, यह बाएं या दाएं या ऊपर या नीचे नहीं है, लेकिन यह परम आनंद का सर्वोत्कृष्ट सार है - वह घोषणा करता है। उन्होंने

आम बोलियों के मिश्रण में लिखा, जिसमें कोई भी हिंद्, उर्द्, फारसी शब्द और भोजपुरी, पंजाबी और मारवाड़ी जैसी बोलियों में इस्तेमाल होने वाले शब्दों और भावों को पा सकता है। भारत के उत्तर पश्चिम के ग्रामीण पीढ़ी दर पीढ़ी उनकी कविताओं का जश्न मनाते हैं

सन्दर्भ ग्रन्थ

- "संत कबीर ने दुनिया को पढ़ाया एकता का पाठ
- "पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी: सभी आत्माओं के जनक
- "कबीर प्रकट दिवस, उत्सव, घटनाएँ, इतिहास
- "मोक्ष प्राप्ति के नियम (कबीर परमात्मा के)
- "पवित्र वेदों में पूर्ण परमात्मा की अवधारणा (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) -
- "पवित्र कुरान शरीफ में प्रभु सशरीर है तथा उसका नाम कबीर है का प्रमाण
- "पवित्र बाईबल में प्रभु मानव सदृश साकार का प्रमाण